IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 और पर्यावरणीय शिक्षा: चुनौतियाँ और अवसर

डॉ. नीता वर्मा (सहायक प्रोफेसर)
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
राजिंदर नगर, एस.सी. ई.आर.टी, दिल्ली -110060

सारांश

आज दुनिया के सामने सबसे बड़ी समस्याओं में से एक पर्यावरण प्रदूषण है। मनुष्य ने पर्यावरण की कीमत पर प्रकृति का अत्यधिक दोहन किया है। पर्यावरणीय क्षति के बारे में लोगों को जागरूक करने की तत्काल आवश्यकता है। यूनेस्को का दावा है कि "पर्यावरणीय शिक्षा- पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्यों को व्यवहार में लाने की एक विधि है"। यह अध्ययन का एक आजीवन महत्वपूर्ण विषय है, न कि विज्ञान की एक अलग शाखा। यह पर्यावरण संरक्षण और सुधार के लिए शिक्षा के साथ-साथ मानव समाज के जीवन स्तर को बढ़ाने के लिए विकास के एक उपकरण के रूप में शिक्षा को संदर्भित करता है। भारत ने कई पहल शुरू की हैं, जिनमें से एक सभी शैक्षिक स्तरों पर पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य बनाना है। आज की दुनिया में स्थानीय पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति इसे अधिक आकर्षक और उत्तरदायी बनाने के लिए पर्यावरण शिक्षा पाठ्यक्रम को फिर से तैयार करने की आवश्यकता है, जहां पर्यावरणीय स्थितियाँ नकारात्मक रूप से बदल रही हैं, और सभी जीवित जीव पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के कारण पीड़ित हैं। पर्यावरण, छात्रों को शैक्षणिक कौशल के अलावा आवश्यक जीवन कौशल के लिए भी तैयार करता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सीखने के माहौल से जुड़े आम मुद्दों को संबोधित करने के लिए बहुत सावधानी बरतती है और इसे बेहतरीन आकार और स्वरूप में रखने के उपायों का प्रस्ताव करती है। नई शिक्षा प्रणाली एक बच्चे को तब संभालती है जब वह सिर्फ़ तीन वर्ष का होता है, और यह निश्चित रूप से लोगों के प्रति नई शिक्षा प्रणाली पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी है। इसके द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सभी राज्यों एवं स्थनीय सरकारों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ेगी यह पेपर पर्यावरण शिक्षा और इसके मूल्यांकन और निकट भविष्य में चुनौतियों के बारे में NEP 2020 के महत्वपूर्ण बिंदुओं को सम्मिलित करेगा।

मुख्य बिंदु: पर्यावरण शिक्षा, चुनौतियाँ, अवसर, पाठ्यक्रम और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,पुनर्जीवित,

परिचय

पारंपरिक आर्थिक और सांस्कृतिक प्रणालियों की दीर्घकालिक स्थिरता,पारंपरिक शैक्षिक कार्यक्रमों का परिणाम है,जिन्होंने मानव प्रकृति और पर्यावरण के साथ एक संतुलित संबंध स्थापित किया है। दुर्भाग्य से आधुनिक औद्योगिक और वैश्विक अनुभव ने पारंपरिक ज्ञान और बुद्धि को कमजोर कर दिया है। सामान्यत: पारंपरिक प्राथमिकताओं और शिक्षा प्रणालियों का उपयोग केवल अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए हुआ है, जिससे प्रकृति और संस्कृति का महत्व कम हो गया है। इसका मतलब है कि समकालीन शिक्षा में स्थायी जीवन के ज्ञान, मूल्यों और कौशल को महत्व दिया जाना चाहिए। वास्तव में कई मामलों में, सीखे गए और छिपे हुए सबक हमारे आधुनिक, समृद्ध, उपभोक्ता-केंद्रित समाज के सामाजिक और पर्यावरणीय मूल्यों को पुनर्जीवित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्तियों को पर्यावरणीय मुद्दों का पता लगाने, समस्या समाधान में भाग लेने और पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए कार्रवाई करने की अनुमति देती है। परिणाम स्वरूप, व्यक्तियों को पर्यावरणीय मुद्दों की गहरी समझ मिलती है और समझदारी से जिम्मेदार निर्णय लेने की क्षमता पैदा करती है।
इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए पाँच संबंधित उद्देश्यों की सिफारिश की गई है:

जागरूकता: सामाजिक समूहों और व्यक्तियों को पूरे पर्यावरण और उससे जुड़ी समस्याओं के बारे में जागरूकता और संवेदनशीलता हासिल करने में मदद करना।
ज्ञान: सामाजिक समूहों और व्यक्तियों को जानकारी की एक विस्तृत श्रृंखला की खोज करने और प्रकृति, समस्याओं और उससे जुड़ी समस्याओं की बुनियादी समझ हासिल करने में मदद करना।

दृष्टिकोण: सामाजिक समूहों और व्यक्तियों को पर्यावरण के लिए मूल्यों और भावनाओं का एक समूह खोजने में मदद करना, साथ ही पर्यावरण के विकास और संरक्षण में सक्रिय रूप से भाग लेने की प्रेरणा देना।
कौशल: सामाजिक समूहों और व्यक्तियों को पर्यावरणीय समस्याओं की पहचान करने और उन्हें हल करने के कौशल हासिल करने में मदद करना।
भागीदारी: सामाजिक समूहों और व्यक्तियों को पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने के लिए काम करने में सभी स्तरों पर भाग लेने का अवसर प्रदान करना (यूनेस्को-यूएनईपी, 1978, पृष्ठ 3)

पर्यावरण शिक्षा में ऐतिहासिक दृष्टिकोण

भारत में पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा असामान्य या हाल ही की नहीं है। यह प्रागैतिहासिक काल से ही चली आ रही है। पर्यावरण के बिगड़ने के परिणामों और मानव जीवन के लिए संरक्षण की आवश्यकता पर स्पष्ट चेतावनी के साथ, भारत में हर धर्म और हर संस्कृति ने परंपराओं और सामाजिक दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करते हुए पर्यावरण संबंधी चिंताओं पर जोर दिया। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को एक सर्वव्यापी शक्ति के रूप में देखा जाता है। वेद, पुराण और उपनिषदों के साथ-साथ पौराणिक महाभारत और रामायण सहित प्राचीन हिंदू ग्रंथों ने पर्यावरण के लिए औचित्य को दृढ़ता से स्थापित किया है। संरक्षण के साथ-साथ धार्मिक अनुष्ठान और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के खिलाफ निषेध। उदाहरण के लिए, अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त में मनुष्य-पृथ्वी के संबंधों के कई संदर्भ हैं। हालाँकि, यह परंपरा अभी भी पूरे देश में स्वदेशी समुदायों में मौजूद है।

1930 से, भारतीय शैक्षिक प्रणाली ने अपने पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा के तत्वों को शामिल किया है। शिक्षा आयोग की रिपोर्ट (कोठारी आयोग-1964-1966) ने अनौपचारिक पर्यावरण शिक्षा की नींव रखी। प्रारंभिक चरण में, रिपोर्ट ने सुझाव दिया कि ***"प्राथमिक विद्यालय के विज्ञान पाठ्यक्रम को छात्रों को भौतिक और जैविक पर्यावरण में प्रमुख तथ्यों, विचारों, सिद्धांतों और प्रक्रियाओं की पूरी समझ हासिल करने में मदद करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।"***

विज्ञान,सामाजिक विज्ञान और शिक्षण सहायक सामग्री में पर्यावरण के बारे में पर्याप्त जानकारी दी गई थी, साथ ही कुछ हद तक भाषा और गणित पाठ्यक्रम में भी आवश्यक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पर्यावरण से सम्बंधित बात की गई है। उच्च माध्यमिक स्तर पर, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी, भूगोल, समाजशास्त्र और गणित की सभी पाठ्यपुस्तकों में पर्यावरण के बारे में पर्याप्त जानकारी शामिल थी, ताकि माध्यमिक स्तर तक सीखे गए ज्ञान, समझ और क्षमताओं को आगे बढ़ाया जा सके। 1972 में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के जवाब में भारत सरकार ने भारतीय संविधान में 42वें संशोधन द्वारा राज्य को “पर्यावरण की रक्षा और सुधार तथा देश के वनों और वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए उपाय करने” की आवश्यकता के द्वारा पर्यावरण जागरूकता को प्रोत्साहित किया जाये। (अनुच्छेद 48-ए) “इसके लिए प्रत्येक नागरिक को वन, झीलों, नदियों और वन्यजीवों सहित प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और सुधार करने तथा जीवित प्राणियों के प्रति दया रखने की आवश्यकता है” इस बात को 15 अनुच्छेद 51 ए खंड (जी) में "मौलिक कर्तव्य" ने प्रत्येक व्यक्ति को उत्तरदायी बना दिया। इस संदर्भ को देखते हुए, भारत सरकार ने 1980 में पर्यावरण विभाग का गठन किया, जिसे बाद में 1985 में पर्यावरण और वन मंत्रालय के रूप में पुनः नामित किया गया।

भारत सरकार ने 1986 में अपनी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) पेश की और इसका एक मुख्य फोकस सभी स्तरों पर शिक्षा देने के महत्व पर था, जिसमें पर्यावरण पर जोर दिया गया था। इस नीति में कहा गया कि "पर्यावरण के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने की बहुत आवश्यकता है" इसे बच्चों से शुरू करना चाहिए और समाज के हर पहलू तक फैलाना चाहिए। स्कूलों और विश्वविद्यालयों को पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार होना चाहिए। यह तत्व पूरी शिक्षण प्रक्रिया में शामिल किया जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) जिसने रणनीति को लागू करने की देखरेख की, ने शिक्षा में किसी भी सुधार के मूल में शिक्षकों को रखने की आवश्यकता को पहचाना। सरकार ने 1986 की गर्मियों में एक महत्वपूर्ण शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया। हज़ारों प्रशिक्षकों को संशोधित अभिविन्यास (ओरिएंटेशन)दिया गया। प्राथमिक विद्यालय स्तर पर, पर्यावरण शिक्षा (ई.ई.) को पर्यावरण अध्ययन (ई.वी.एस.) के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। हमारे पर्यावरण के भौतिक, जैविक और सामाजिक पहलुओं का अध्ययन ई.वी.एस. में ग्रेड III से V के लिए किया जाता है, जिसमें इसे संरक्षित और संरक्षित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है (एन.सी.एफ 2005)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एन.सी.एफ)-2005 में कहा गया है कि पर्यावरण शिक्षा को भौतिकी, गणित, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा, कला और संगीत सहित विभिन्न पाठ्यक्रमों में एकीकृत किया गया है। एन.सी.एफ 2005 के अनुसार, ई.वी.एस पढ़ाने के कुछ लक्ष्य निम्नलिखित हैं। बच्चों को प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सेटिंग के बीच संबंधों को देखना और समझना सिखाना। अवलोकन और वास्तविक दुनिया के अनुभवों से लिए गए उदाहरणों के आधार पर समझ बनाना। अमूर्त विचारों के बजाय, जीवन के भौतिक, जैविक, सामाजिक और सांस्कृतिक घटकों पर विचार करें।

- युवा को सामाजिक मुद्दों की घटनाओं में रुचि रखने के लिए संज्ञानात्मक क्षमता और संसाधनशीलता विकसित करना, जो कि तत्काल परिवार से शुरू होकर बड़े स्थानों तक विस्तारित हो।
- बच्चे में आविष्कारशीलता और आश्चर्य की भावना को प्रोत्साहित करना, विशेष रूप से प्राकृतिक दुनिया (लोगों और वस्तुओं सहित) के बारे में पर्यावरण संबंधी के बारे चिंतन करके ज्ञान को बढ़ाना।
- बच्चे को अवलोकन, वर्गीकरण, अनुमान आदि के माध्यम से मौलिक संज्ञानात्मक और मनोप्रेरक क्षमताओं को सीखने में मदद करने के लिए व्यावहारिक, खोजपूर्ण गतिविधियों में शामिल करना।
- तकनीकी और मात्रात्मक कौशल के बाद के विकास के लिए आधार के रूप में डिजाइन और निर्माण, अनुमान और माप पर जोर देना।

पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता

ग्लोबल एनवायरनमेंट आउटलुक की कई रिपोर्टों से पर्यावरण को होने वाले नुकसान की पुष्टि हुई है। जनसंख्या विस्तार, आर्थिक गतिविधि और उपभोग की आदतों के कारण पर्यावरण पर लगातार दबाव बढ़ रहा है। इसका तात्पर्य यह है कि ऊर्जा, परिवहन और उपभोग के अन्य रूपों की मांग में तेजी से वृद्धि के कारण प्रदूषण के कई रूप लगातार बढ़ रहे हैं।

अस्थायी भूमि उपयोग के परिणामस्वरूप मिट्टी का कटाव, पोषक तत्वों की कमी, पानी की कमी, लवणता और जैविक चक्रों में गड़बड़ी हुई है, जो सभी भूमि क्षरण के उदाहरण हैं। क्षरण अन्य पारिस्थितिकी तंत्रों, उत्पादकता, जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन को प्रभावित करता है। पानी की कमी बढ़ती जा रही है, जिससे पर्यावरण समस्याओं, खाद्य सुरक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और विकास को खतरा है। जनसंख्या विस्तार, ग्रामीण-शहरी आंदोलन, बढ़ती आय, संसाधनों के अत्यधिक दोहन और जलवायु परिवर्तन के परिणाम स्वरुप जल और भूमि संसाधनों की मात्रा और गुणवत्ता के साथ-साथ पर्यावरण सहायता सेवाओं के लिए खतरा पैदा करते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र के नुकसान और वैश्विक स्तर पर जैव विविधता में कमी से भविष्य के विकास के लिए को अभी भी गंभीर रूप से खतरा है। इसलिए, पर्यावरणीय गिरावट प्रगति में बाधा डालती है, भविष्य के विकास को खतरे में डालती है और यह स्पष्ट रूप से मानव स्वास्थ्य के मुद्दों से जुड़ी हुई है। भारत वर्तमान में कई मुद्दों से जूझ रहा है। भारत के पर्यावरण की स्थिति पर विज्ञान और पर्यावरण केंद्र (सी.एस.ई.) द्वारा सबसे हालिया आधिकारिक आकलन के अनुसार, जैसे: -

- रिपोर्ट में प्रवासी आबादी पर 2011 की जनगणना के आंकड़ों का भी विश्लेषण किया गया और पाया गया कि पिछले साल भारत के भीतर 50 लाख से अधिक लोगों को निकाला गया, जो दुनिया में सबसे अधिक संख्या है।
- दक्षिण-पश्चिम मानसून के कारण आई बाढ़ के कारण 26 लाख लोग विस्थापित हुए, जबकि अकेले चक्रवात फानी के कारण 18 लाख लोग विस्थापित हुए, इसके बाद चक्रवात वायु और बुलबुल का स्थान रहा।
- त्रासदियों के समय, देश में 45 करोड़ से अधिक प्रवासी थे, उनमें से अधिकांश अपने ही राज्य के अंदर जा रहे थे। 2011 में, 1.7 से अधिक नए प्रवासी, जिनमें से अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में काम के उद्देश्य से

आए थे।

- इन क्षेत्रों में वन क्षेत्र में 38% की कमी आई है, और 21 नदी झरनों में से पाँच में वर्तमान में पानी की कमी है।
- पिछले साल 19 महत्वपूर्ण मौसम आपदाओं के कारण 1,357 लोगों की मृत्यु हुई।
- कोरोना के दौरान बंद के अनुभवों ने यह सुनिश्चित किया है कि औद्योगिक गतिविधि और वाहन उत्सर्जन शहरी वायु प्रदूषण में प्राथमिक योगदानकर्ता हैं। लगभग 1200 मिमी की औसत वार्षिक वर्षा के साथ, प्रभावी जल प्रबंधन तकनीकों की कमी के कारण यह संसाधन दुर्लभ होता जा रहा है।

ये कुछ ऐसे कारण हैं जिनके लिए हम बेहतर पर्यावरण शिक्षा की उम्मीद कर सकते हैं। यह समझना महत्वपूर्ण है कि हम प्रकृति से कैसे जुड़े हैं। हम अपने परिवेश पर निर्भर हैं। एक स्थायी पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए, प्रकृति के साथ हमारे संबंधों और इस तथ्य को समझना आवश्यक है कि हम जीवन से भरे इस विश्व में कई प्रजातियों में से सिर्फ़ एक प्रजाति हैं।

हमारी गतिविधियों ने जीवन प्रत्याशा, भौतिक संपदा, यात्रा और अवकाश सहित सकारात्मक प्रभाव लाए हैं। लेकिन अन्य अधिक प्रतिकूल विकास भी हुए हैं। भूमि क्षरण, वायु, जल प्रदूषण और विलुप्ति ने आज मानव कल्याण को खतरे में डाल रहे हैं। यह मानव स्वास्थ्य के लिए जोखिम पैदा करता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें अपने संबंधों को समझना चाहिए क्योंकि पर्यावरण को समझना हमारे लिए सबसे ज़रूरी पर्यावरणीय मुद्दे बन गया है जिसे समय रहते हल करने बहुत महत्वपूर्ण हो गया है जो अंततः सामाजिक, आर्थिक या स्वास्थ्य प्रणालियों को प्रभावित करता है।

पर्यावरण शिक्षा और नई शिक्षा नीति 2020

एन.ई.पी.-2020 हमें भारतीय स्व को पुनः प्राप्त करने, अभिव्यक्त करने और पुनर्संरचना करने के लिए एक रोडमैप प्रदान करता है, ताकि हम एक वैश्विक नेता (विश्वगुरु) बन सकें, जहाँ स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का जश्न मनाया जा सके। यह सतत विकास के लक्ष्यों को उचित महत्व देता है, जो पर्यावरणीय लाभ से भी संबंधित है। यह नीति स्वदेशी ज्ञान के प्रसार पर भी जोर देती है, जो पर्यावरणीय चुनौतियों की बेहतरी के लिए भी बहुत फायदेमंद है। लेकिन बेहतर पर्यावरण शिक्षा के प्रति स्वीकृति की कमी बहुत निराशाजनक है क्योंकि भारतीय शिक्षा प्रणाली पर्यावरण शिक्षा में विफल हो रही है। भारतीय शिक्षा प्रणाली के उत्पाद पर्यावरण के मुद्दों के बारे में चिंतित नहीं हैं। इस रवैये के कारण भारतीय पर्यावरण अनुसंधान में पिछड़ रहा है। इसलिए यह जरूरी था कि हम पर्यावरण शिक्षा में बहुत जरूरी पाठ्यक्रम और शैक्षणिक बदलावों के बारे में बात करें।

पर्यावरण विनाश का वर्तमान स्तर मानवता के इतिहास में अद्वितीय है और यदि इसे वर्तमान दर पर जारी रहने दिया जाता है, तो हम अपनी पीढ़ी के भीतर, एक ऐसी प्रवृत्ति के प्रारंभिक चरणों का अनुभव करेंगे जो हमारे जीवन के मूल ढांचे को नष्ट करने का गंभीर जोखिम उठाते हैं। पर्यावरण संकट के मूल में अति-उपभोग है, पर्यावरण शिक्षा द्वारा हमें लोगो को उपभोग नियंत्रण सिखाना चाहिए, जिससे अंततः हम अपने उपभोग पैटर्न को बदलकर जैव विविधता और अपने स्वयं के पर्यावरण कल्याण को संरक्षित करने में मदद कर सकते हैं। पर्यावरण शिक्षा के लिए इन चुनौतियों के लिए आवश्यक है कि हम जिस तरह से अनुसंधान करते हैं और पर्यावरण पेशेवरों और शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं, जो नीतियाँ बनाते हैं, साथ ही जिस तरह से हम आम जनता को पर्यावरण संबंधी जानकारी देते हैं, उसकी फिर से जाँच करें। हम आज की प्रासंगिक समस्याओं पर चर्चा करने के लिए अनुशंसित पर्यावरण विज्ञान पुस्तकों को अपडेट करके ऐसा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, कई भारतीय पाठ्यपुस्तकें अभी भी ओजोन परत के क्षरण के बारे में एक मुद्दे के रूप में बात करती हैं। 1987 में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के अनुसमर्थन के बाद, अंटार्कटिका के ऊपर ओजोन छिद्र लगातार बंद हो रहा है। यह वैश्विक मुद्दा, जैसा कि कई लोगों ने घोषित किया है, अब हल हो गया है। इन पुस्तकों को केवल कुछ लोकप्रिय वैश्विक समस्याओं के बजाय विशिष्ट राष्ट्रीय पर्यावरणीय समस्याओं पर अधिक जोर देना चाहिए। पर्यावरण की रक्षा के लिए उन्हें और अधिक व्यक्तिगत कारण बनाने देने का एक और तरीका है कि उन्हें वास्तव में इसके बारे में बताया जाए। उदाहरण के लिए, भारतीय छात्रों को अपने संबंधित देश के वनस्पतियों और जीवों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। यदि वे केवल बाघ/हाथी/गैंडे को ही ऐसी प्रजाति के रूप में देखते हैं, जिन्हें इस देश में संरक्षण की सख्त जरूरत है, तो वे भारत की जैव विविधता की स्थिति के बारे में खतरनाक रूप से गलत जानकारी रखते हैं। वे उन विशेष प्रजातियों की सुरक्षा के लिए वित्तीय रूप से योगदान देने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते हैं, जो फिर से उद्देश्य से जुड़ने का एक बहुत ही अप्रत्यक्ष तरीका है। भारत अपनी जलवायु, भूगोल, भूविज्ञान, जातीयता, वनस्पतियों और जीवों, समाज और अर्थव्यवस्था के मामले में एक अत्यधिक विविध देश है। इसलिए, देश में पर्यावरण शिक्षा को स्थान-विशिष्ट होना चाहिए।

भारतीय शिक्षा प्रणाली द्वारा अधिक पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता को समझने में विफलता काफी खेदजनक है। भारत में स्कूली शिक्षा प्रणाली के लिए पर्यावरण संबंधी चिंताएँ प्राथमिकता नहीं हैं। इस मानसिकता के कारण, भारत पर्यावरण अनुसंधान में पिछड़ रहा है, इसलिए यह आवश्यक था कि हम पर्यावरण शिक्षा पाठ्यक्रम और शिक्षण सुधारों पर चर्चा करें, जिनकी बहुत आवश्यकता है।
हम एक ऐसी प्रवृत्ति के शुरुआती चरणों का सामना करेंगे, जो पर्यावरण विनाश की वर्तमान दर को जारी रखने की अनुमति दिए जाने पर हमारी पीढ़ी के भीतर हमारे अस्तित्व के मूल ढांचे को नुकसान पहुँचाने का गंभीर जोखिम उठाती है। पर्यावरण क्षति की वर्तमान डिग्री मानवता के इतिहास में अभूतपूर्व है। पर्यावरण संबंधी समस्याएँ अधिकतर अति उपभोग के कारण होती हैं, यही कारण है कि पर्यावरण शिक्षा को उपभोग संयम पर जोर देना चाहिए। अंततः हमारी उपभोग आदतों को संशोधित करने से जैव विविधता और हमारे अपने पर्यावरण कल्याण की रक्षा करने में मदद मिलेगी। पर्यावरण शिक्षा के लिए ये चुनौतियाँ हमें इस बात पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर करती हैं कि हम कैसे शोध करते हैं, पर्यावरण विशेषज्ञों और शिक्षकों को शिक्षित और प्रशिक्षित करते हैं, कानून बनाते हैं, और जनता को पर्यावरणीय ज्ञान का प्रसार करते हैं।

वर्तमान में पर्यावरण शिक्षा (ई.ई.) को पाठ्यपुस्तक के केवल कुछ अध्यायों तक सीमित कर दिया जाएगा। जो पर्यावरणीय मुद्दों की चर्चा के दायरे को संकुचित करेगा। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में ई.ई. के क्षेत्र में शिक्षकों की उपलब्धता व शिक्षण विधियों के लिए सीमित प्रकृति और प्रेरणा का कारण हो सकती है। पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर संदर्भ में संसाधनों की कमी और प्रत्येक राज्य की विशिष्ट कठिनाइयों और खराब स्कूल बुनियादी ढांचे के कारण प्रशिक्षकों के लिए अपने पाठों में ई.ई. को शामिल करना मुश्किल है।

उल्लिखित समस्याओं पर काबू पाने के लिए यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं:

- स्कूल पुस्तकालयों को विभिन्न सरकारी और गैर-लाभकारी संगठनों से वास्तविक संदर्भ संसाधन प्राप्त हो सकते हैं। इससे प्रशिक्षक को राज्य के पर्यावरणीय मुद्दों को प्रासंगिक बनाने में मदद मिलेगी।
- स्कूलों को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) तक पहुँच प्रदान करने से उन्हें डिजिटल सामग्रियों तक त्वरित पहुँच मिलेगी और राष्ट्र और दुनिया भर में पर्यावरण संबंधी चिंताओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने में योगदान मिलेगा।
- मुख्य विषयों के शिक्षकों से आग्रह करना महत्वपूर्ण है कि वे ई.ई. विषयों पर ध्यान दें जो अन्य विषयों की सामग्री के साथ जुड़े हुए हैं।
- कक्षा में प्रशिक्षक की सहायता के लिए, मॉड्यूल, सेमिनार और लगातार चर्चा मंचों का आयोजन करना आवश्यक होगा।
- आधुनिक पर्यावरणीय मुद्दों के एकीकरण की अनुमति देने के लिए नियमित रूप से पाठ्यपुस्तकों में संशोधन होना चाहिए।
- निर्देश के संदर्भ में, जांच- और अन्वेषण-आधारित मानसिकता को बढ़ावा देने के लिए केस स्टडी, फील्ड ट्रिप और प्रकृति की सैर और प्रोजेक्ट कार्य को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- अनुसंधान, सिद्धांत और वास्तविक दुनिया के अनुभवों के आधार पर, बच्चों द्वारा निर्देशित और जांच-आधारित उपयुक्त अभ्यासों का निर्माण करना संभव है।
- यथार्थवादी स्थितियों में आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और निर्णय लेने को प्रोत्साहित करके, आकर्षक कहानियाँ और केस स्टडी साक्ष्य ई.ई. तकनीकों की समझ में मदद करेंगे।
- पर्यावरण जागरूकता का विकास, पर्यावरण को समझने के कौशल, जिज्ञासा और जांच के साथ-साथ कर्तव्य और देखभाल की व्यक्तिगत भावना, सभी को पर्यावरण सीखने के लिए पाठ्यक्रम ढांचे में शामिल किया जा सकता है।

निष्कर्ष

पर्यावरण शिक्षा को और अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए, हमें वैश्विक परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यह तथ्य कि छात्र पर्यावरण सम्बन्धी चुनौतियों को व्यक्तिगत मामलों के रूप में नहीं देखते हैं, उनके दृष्टिकोण में बदलाव की विशेष जरुरत है। छात्रों को पर्यावरण की रक्षा मानव विकास के लिए अधिक औचित्य बताकर,इस कमी को ठीक किया जा सकता है। यह बहुत अच्छी बात है कि इतनी सारी प्राकृतिक विज्ञान कक्षाएं छात्रों के दिल और दिमाग को जोड़ती हैं और आशावादी सोच को बढ़ावा देती हैं। हालाँकि, शोध ने पाया है कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए छात्रों कक्षा-कक्ष की दुनिया से बाहर निकालकर उन्हें अधिक अवसर प्रदान किये जाये जिससे आने वाले समय में पूरी दुनिया में इसके औचित्य को और अधिक महत्त्व देकर इस कमी को दूर किया जा सके।

सन्दर्भ

- शर्मा, आर.सी. और मेरले सी. टैन (1990)। माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए पर्यावरण शिक्षा में स्रोत पुस्तक, यूनेस्को, बैंकॉक।
- शर्मा, पी.डी. (1999)। पारिस्थितिकी और पर्यावरण। रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, 1964-66 (1970), http://www.academics-india.com/Kothari%20Commission%20Report.pdf
- सत्यभूषण, गोविंदा आर. और अंजना मंगलागिरी, शैक्षिक योजनाकारों के लिए पर्यावरण शिक्षा पुस्तिका। (1990) एनआईईपीए, नई दिल्ली।
- जोसेफ कैथरीन (2011) पर्यावरण शिक्षा, नीलकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद।
- प्रशांत, एम.एस. और होसेटी, बी.बी. (2010)। पर्यावरण विज्ञान के तत्व। प्रतीक्षा प्रकाशन, जयपुर।
- जयंत गंगरेदिवार (2014), पर्यावरण विज्ञान, एसबीडब्ल्यू प्रकाशक, दिल्ली
- यूनेस्को-यूएनईपी (1978) टिबिलिसी घोषणा, कनेक्ट, III (1), 1-9। (पर्यावरण शिक्षा की प्रकृति, दायरे और उद्देश्य का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहमत कथन)
- भट, एस. ए., जाहिद, ए. टी., शेख, बी. ए., और पैरी, एस. एच. (2017)। भारत में पर्यावरण शिक्षा: सतत विकास के लिए एक दृष्टिकोण। एफआईआईबी बिजनेस रिव्यू, 6(1), 14-21।